दिशाएँ

दिशाएँ प्राचीनकाल से ही मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण रही हैं। ऐसे स्थान जहाँ पर कोई संकेत जैसे पेड़, पर्वत, भवन आदि नहीं होते थे, वहाँ पर यात्रा करने में दिशा का सही ज्ञान बहुत आवश्यक था। दिशा के विशुद्ध ज्ञान के कारण ही समुद्री यात्राएँ तथा रेगिस्तान की यात्राएँ संभव हो पाई। दिशाओं के ज्ञान से ही भूगोल, ज्योतिष आदि विज्ञानों के सिद्धान्तों की स्थापना संभव हो सकीं। पृथ्वी की गति, अंतरिक्ष तथा सौरमंडल की संरचना आदि रहस्य दिशा के ज्ञान से ही प्रकट हो सके। न केवल मनुष्य, बल्कि पशु पक्षियों के लिए भी दिशाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रवासी पक्षियों में तो दिशाओं का अद्भुत ज्ञान होता है। ये पक्षी हजारों मील की उड़ान बिना रास्ता भटके कर लेते हैं। दिन-भर भोजन की तलाश में भटककर घने जंगलों में भी पशु अपने आश्रयस्थल पर लौट आते हैं। पशु-पक्षियों की ये क्रियाएँ उनके दिशा ज्ञान को सिद्ध करती हैं।

प्रकृति की समस्त दिशाएँ अत्यंत परिशुद्ध व निश्चित है। लगभग सभी प्राकृतिक क्रियाएँ चक्रीय क्रियाएँ होती हैं। अर्थात् सभी क्रियाएँ एक निश्चित काल के पश्चात् पुन: घटित होंगी। सूर्योदय, सूर्यास्त, ऋतुएं, वर्ष आदि सभी प्राकृतिक क्रियाएँ हैं जो एक निश्चित अंतराल के बाद पुन: होती है। जिस प्रकार इन सभी क्रियाओं की कालावधि तथा आवर्तकाल निश्चित है उसी प्रकार इनके घटित होने का स्थान अथवा दिशा भी निश्चित ही होते हैं। सूर्य सदा पूर्व दिशा से ही उदित होता है, अस्त सदा पश्चिम में ही होता है। इन सभी प्राकृतिक क्रियाओं का मानव जीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और ये सभी क्रियाएँ अपनी निर्धारित दिशाओं का सदा पालन करती हैं। अत: मनुष्य पर दिशाओं का प्रभाव पड़ना भी स्पष्ट है। सभी दिशाओं का मानव जीवन पर अपना विशिष्ट प्रभाव है।

INSTITUTE OF VEDIC ASTROLOGY, Indore. ☎: 07314070612, 4076613. www.ivaindia.com

दिशाओं के प्रभाव जानने से पहले यह अत्यंत आवश्यक है कि दिशाओं के निर्धारण को समझ लिया जाए। वास्तुशास्त्र में आठ दिशाएँ निर्धारित की गई हैं। इनमें से चार प्राथमिक दिशाएँ हैं:-

(1) पूर्व **(2)** पश्चिम **(3)** उत्तर **(4)** दक्षिण

ये प्राथमिक दिशाएँ मिलकर चार अन्य दिशाएँ बनाती हैं:-

(5) उत्तर-पश्चिम **(6)** दक्षिण-पश्चिम **(7)** दक्षिण-पूर्व **(8)** उत्तर-पूर्व

आठों दिशाओं अर्थात चार प्राथमिक व चार उप दिशाओं का वास्तु के अनुसार विशिष्ट प्रभाव होता है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि दिशाएँ ही वास्तु के प्रयोग का आधार है। सभी दिशाओं के उचित प्रभाव ग्रहण करना ही वास्तु का उद्देश्य है। भवन के विभिन्न भागों को किस दिशा में स्थित होना चाहिये, किस दिशा में कौन सा कक्ष निषिद्ध है, यह सब वास्तुशास्त्र में समझाया गया है।

(1) उत्तर दिशा

वास्तुशास्त्र के अनुसार, कुबेर भवन की उत्तर दिशा के स्वामी हैं। कुबेर अथाह धन-संपदा, वैभव के स्वामी है अत: उत्तर दिशा से भवन में धन संपदा का आगमन होना माना गया है। उत्तर दिशा के अन्य देव हैं - दिति, अदिति, सर्प, भलत् आदि। भवन में धन-संपदा के निर्बाध आगमन तथा उत्तर-दिशा के शुभ प्रभाव के लिए भवन के उत्तरी भाग को खुला व हवादार बनाना चाहिए। भवन का उत्तरी भाग अन्य भागों से ऊँचा न होकर नीचा ही होना चाहिए। इस भाग के निचले होने से यहाँ स्थित अवरोध स्वत: ही समाप्त हो जाएगें।

INSTITUTE OF VEDIC ASTROLOGY, Indore. ☎: 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com

यदि उत्तरी भाग में कोई अवरोध है अथवा यह भाग भवन के अन्य भागों से ऊँचा है तब उत्तर दिशा के अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो सकेंगे। भवन की उत्तर दिशा में दक्षिण-दिशा की अपेक्षा अधिक खुला स्थान होना चाहिए। अत: भवन यदि उत्तर मुखी है तो ऐसे भवन में आगे आंगन बड़ा व खुला छोड़ना चाहिये। इस भवन का मुख्य द्वार बड़ा होना चाहिये। ऐसे भवन में उत्तर दिशा के शुभ प्रभाव सरलता से प्रवेश कर सकेंगे। भवन का अतिथि कक्ष उत्तर दिशा में बनाना चाहिये।

भवन की उत्तर दिशा में यदि कोई बड़ा भवन आदि है तो वह उत्तर दिशा के शुभ प्रभाव को अवरुद्ध करेगा। उत्तर मुखी भवन के सामने यदि खुला मैदान अथवा नदी समुद्र, तालाब आदि है तो निश्चित ही इस भवन में असीम धन संपदा का आगमन होगा। भवन की उत्तर-दिशा को मातृस्थान भी कहा गया है। अत: यह स्त्रियों से संबंधित दिशा है। उत्तर में खुला स्थान होना घर की महिलाओं के लिए अच्छा है और उत्तर में कोई अवरोध होना महिलाओं पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

(2) उत्तर-पूर्व दिशा

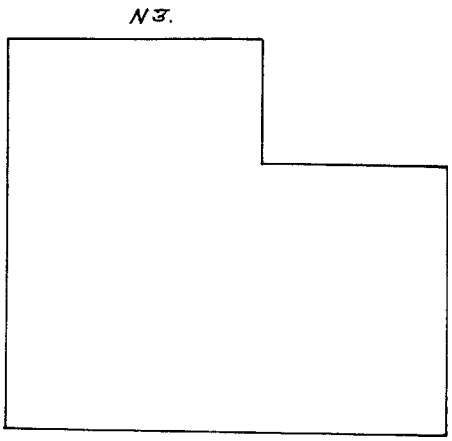

उत्तर व पूर्व दिशाओं के मध्य उत्तर-पूर्व कोण स्थित है। उत्तर-पूर्व का कोण स्वास्थ्य, संपन्नता तथा धन का स्रोत है। इसे 'ईशान' कोण कहा जाता है। परम पिता ब्रह्माजी स्वयं इस स्थान के स्वामी है। इस स्थान पर बड़ी अथवा भारी वस्तु के स्थित होने का अर्थ है परम पिता ब्रह्मा की कृपा को दबाना। इस स्थान पर कोई भारयुक्त वस्तु कभी नहीं होनी चाहिए। उत्तर-पूर्व कोण सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग है क्योंकि इस स्थान पर उत्तर से आने

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY, Indore. ☎: 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com

वाली चुम्बकीय तरंगे तथा पूर्व से बहने वाली सौर ऊर्जा दोनों का सम्मिलित शुभ प्रभाव प्राप्त होता है। उत्तर तथा पूर्व दोनों दिशाओं के शुभ प्रभाव को ग्रहण करने के लिए उत्तर-पूर्व को खुला रखना ही चाहिए। उत्तर-पूर्व में खुला स्थान छोड़ने के साथ-साथ इस स्थान को भूखण्ड के अन्य भागों से निचला किया जा सकता है।

उत्तर-पूर्व कोण का निचला होना निवासियों को स्वास्थ्य, संपदा तथा दीर्घायु प्रदान करेगा। इस स्थान का भवन के अन्य भागों से ऊँचे होने पर निवासियों पर रोग तथा आर्थिक समस्या जैसे नकारात्मक प्रभाव पड़ेंगे। भवन के इस कोण में शौचालय, भंडारगृह आदि नहीं बनाना चाहिए। भवन का उत्तर पूर्वी कोण जल तत्व का स्थान होता है। अत: यहाँ पर जल भण्डार स्थित होना उचित है। इस कोण को खुला रखने हेतु जल भण्डार भूमिगत होना सर्वाधिक उपयुक्त है। यदि किसी भूखण्ड में उत्तर पूर्वी कोण उपस्थित ही नहीं है या कटा है तो ऐसे भूखण्ड पर भवन बनाने पर अत्यंत दुष्परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। ऐसे भवन के निवासी सदा ही रोग, अल्पायु, आर्थिक समस्या आदि नकारात्मक प्रभावों से ग्रस्त रहेंगे। ईशान कोण पुरुषों तथा बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है। बच्चे तथा घर के पुरुष ऐसे भवन से सर्वाधिक प्रभावित होंगे।

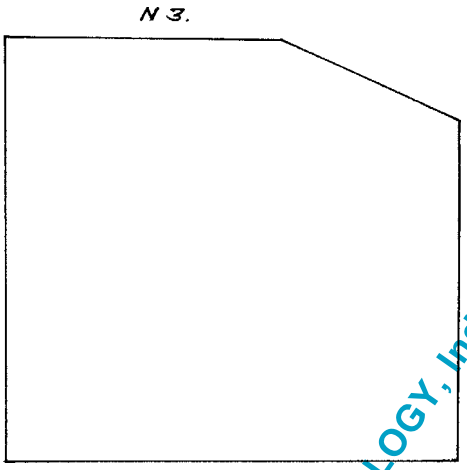

(3) पूर्व दिशा

भवन की पूर्व दिशा शुभ मानी जाती है। इस दिशा के स्वामी इन्द्र देव हैं। इन्द्र देव संपन्नता के सूचक हैं अत: भवन की पूर्व दिशा से घर में संपन्नता का आगमन होता

INSTITUTE OF VEDIC ASTROLOGY, Indore. Ph: 07314076612, 4076613 www.ivaindia.com

है। भवन की पूर्व दिशा में भी खुला स्थान होना चाहिए तथा कोई भी अवरोध कदापि नहीं होना चाहिए। उत्तर दिशा के समान ही पूर्व दिशा में भी खुला स्थान होना चाहिए। इससे भवन में सूर्य की ऊर्जा व प्रकाश प्रचुर मात्रा में प्रवेश कर सकेंगे। इस भाग को यदि भवन के अन्य भागों से निचला रखा जाए तब भी इसके अच्छे परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

इसके विपरीत, यदि भवन का पूर्वी भाग अन्य भागों से ऊँचा हो तो सूर्य की ऊर्जा व प्रकाश के लिए अवरोध उत्पन्न होगा। सम्पन्नता भी नहीं होगी। अत: ऐसा घर नकारात्मक प्रभावों से घिरा रहेगा। इस दिशा को पितृस्थान भी कहा जाता है। इस दिशा में कोई रुकावट होने पर घर के पुरुष पीड़ित होंगे। पूर्व में रुकावट होने पर घर में लड़कों की उत्पत्ति बाधित होगी। भवन के पूर्व में यदि भूखण्ड रिक्त छोड़ना संभव न हो तो इस दिशा में अधिक से अधिक खिड़की, दरवाजे, रोशनदान आदि होना चाहिए। ऐसा करने से भी पूर्व दिशा के शुभ प्रभाव प्राप्त किए जा सकते हैं।

पूर्व दिशा से सम्बन्धित अन्य देव हैं - ईश, जयंत, सूर्य, सत्य, आकाश, अग्नि आदि।

(4) दक्षिण-पूर्व दिशा

यह कोण दक्षिण तथा पूर्व दिशा के मध्य स्थित है। अग्नि देव इस दिशा के स्वामी हैं। वास्तु में इसे आग्नेय कोण कहा गया है। यह कोण निवासियों के स्वास्थ्य का सूचक है। पंच तत्वों में से अग्नि तत्व का स्थान दक्षिण पूर्व ही निर्धारित किया गया है। इस दिशा में अग्नि से सम्बन्धित स्थान जैसे रसोई आदि हो सकते हैं।

INSTITUTE OF VEDIC ASTROLOGY, Indore. ☎: 0731-4076612, 4076613, www.ivaindia.com

अग्नि और जल एक दूसरे के विरोधी हैं अत: दक्षिण-पूर्वी कोण पर जल स्थान होने से नकारात्मक प्रभाव हो सकते हैं। अत: इस कोण पर पानी की टंकी आदि जलस्थान कदापि न हो। भवन का दक्षिण-पूर्वी भाग यदि दक्षिण-पश्चिमी भाग से निचला एवं उत्तर-पूर्व व उत्तर-पश्चिम से ऊँचा है तो इसके शुभ प्रभाव प्राप्त होंगे। परंतु यही भाग यदि उत्तर-पूर्व तथा उत्तर-पश्चिम से निचला है तो भवन में चोरी, अग्नि आदि का भय बना रहेगा। भवन के इस भाग में हवन यज्ञ आदि अग्नि से संबंधित अनुष्ठान करना उपयुक्त है।

(5) दक्षिण दिशा

दक्षिण दिशा के स्वामी यमराज हैं। दक्षिण दिशा फसल, पशु, शान्ति तथा संपन्नता से संबंधित हैं। भवन की दक्षिण दिशा में न्यूनतम रिक्त स्थान छोड़ने से इसके शुभ प्रभाव प्राप्त किए जा सकते हैं। भवन का दक्षिणी भाग सदा ही उत्तरी भाग से ऊँचा होना चाहिए। इस दिशा में कम से कम दरवाजे खिड़कियाँ हों। यदि भवन दक्षिण मुखी है तो उत्तर में अधिक खिड़कियाँ बनवाकर तथा दक्षिण में आंगन छोटा रखकर इस दिशा के शुभ परिणामों को प्राप्त किया जा सकता है।

दक्षिण दिशा महिलाओं से संबंधित है। दक्षिण दिशा के व्यवस्थित होने से महिलाएं सुखी रहती हैं। महिलाओं द्वारा संचालित व महिलाओं से संबंधित प्रतिष्ठान भी दक्षिण दिशा में शुभ माने जाते हैं। दक्षिण दिशा के स्वामी यमराज मृत्यु या विनाश के सूचक हैं। इनके अतिरिक्त दक्षिण दिशा से संबंधित देव हैं - पूषा, वितथ, गृहक्षत, गंधर्व, भृंगराज, मृग आदि।

INSTITUTE OF VEDIC ASTROLOGY, Indore ☎ 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com

(6) दक्षिण-पश्चिम दिशा

दक्षिण तथा पश्चिम दिशा के मध्य का कोण दक्षिण-पश्चिम कहलाता है। वास्तु में इस कोण को 'नैर्ऋत्य' कहा गया है। नैर्ऋत्य कोण की स्वामी, असुरी पूतना है। यह स्थान व्यवहार, चरित्र, दीर्घायु तथा कलह से संबंधित है। भवन का दक्षिण-पश्चिमी कोण सभी प्रकार के शुभ कर्मों के लिए वर्जित है। नैर्ऋत्य कोण के शुभ प्रभावों को प्राप्त करने के लिए इस कोण को बड़ी व भारी वस्तुओं से ढंक देना चाहिए। इस कोण पर खुला स्थान होने से तीक्ष्ण दुष्परिणामों का सामना करना पड़ेगा। पंच तत्वों में से पृथ्वी का स्थान नैर्ऋत्य कोण में ही हैं। इस स्थान की ऊँचाई व भार अधिक होना चाहिए।

(7) पश्चिम दिशा

पश्चिम दिशा नाम, यश और संपन्नता की द्योतक है। वास्तुशास्त्र के अनुसार पश्चिम दिशा के स्वामी वरुण देव हैं। वरुण देव वर्षा तथा जल के अधिष्ठाता हैं। वर्षा सदा ही प्राणियों के अस्तित्व के लिए आवश्यक रही है। अत: पश्चिम दिशा से मनुष्य की प्रगति के द्वार खुलते हैं। परंतु यदि भवन की पश्चिम दिशा में वास्तु अनुसार निर्माण नहीं है तो इस दिशा के तीक्ष्ण नकारात्मक परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। भवन या भूखण्ड का पश्चिमी भाग पूर्व से अधिक ऊँचा रहना चाहिए। भूखण्ड के पश्चिमी भाग में कम से कम रिक्त स्थान छोड़ना चाहिए। ऐसा न करने से निवासियों की प्रतिष्ठा में कमी होगी, पुरुषों पर नकारात्मक प्रभाव होगा तथा अनैतिक व अस्थिर विचार जन्म लेंगे।

वास्तुशास्त्र के अनुसार पश्चिम दिशा को ऊँचा तथा भरा रखने पर इस दिशा के शुभ प्रभाव प्राप्त होंगे। ऐसे भवन संपन्नता तथा सफलतादायक होंगे। रहवासियों की मान-प्रतिष्ठा में निरंतर वृद्धि होगी, व्यापार-उद्योग का विकास होगा तथा पुरूषों पर

INSTITUTE OF VEDIC ASTROLOGY, Indore. ☎: 0731-4076612, 4076613 www.ivaindia.com

सकारात्मक प्रभाव होगा। इस दिशा के अन्य देव - शेष, वरुण, पुष्पदंत, सुग्रीव आदि हैं।

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY Indore. ☎: 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com

(8) उत्तर-पश्चिम दिशा

उत्तर तथा पश्चिम दिशा के मध्य उत्तर-पश्चिमी कोण स्थित है। वास्तु के अनुसार, उत्तर-पश्चिमी कोण में वायु तत्व का स्थान है। इस कोण को वास्तुशास्त्र में वायव्य कोण कहा गया है। सभी प्राणियों के जीवन के लिए वायु अत्यंत आवश्यक है। अत: इस कोण को खुला व हवादार रखना आवश्यक है। यह सुस्पष्ट है कि वायु देव इस दिशा के स्वामी हैं। यह कोण, व्यापार, उद्योग, मित्रता तथा मस्तिष्क संबंधी विषयों का सूचक है। वायव्य कोण के शुभ प्रभाव प्राप्त होंगे तो व्यापार, उद्योग में निरंतर प्रगति होगी, मानसिक शांति बनी रहेगी तथा रहवासियों में मैत्री का भाव रहेगा।

(9) पाताल

यह भूमि की दिशा होती है। पाताल का तात्पर्य है भूमि के नीचे। वास्तु शास्त्र के अन्तर्गत इसे भूमि के कुछ नीचे तक माना गया है। भूमि के अन्दर जो सामग्री दबी पड़ी है उसका प्रभाव निवासियों पर पड़ता है। कई बार ऐसा होता है कि किसी स्थान पर सोने बैठने से बैचेनी, बुरे-डरावने सपने आदि प्रकोप होते है। यह स्थिति भूमि के नीचे दबी सामग्री के कारण होता है। इन पदार्थों का प्रभाव दूसरे-तीसरे तल तक होता है।

(10) आकाश

आकाश अर्थात् ऊपर की दिशा होती है। भवन से आकाश और क्षितिज़ कितना खुला है, भवन पर धूप कितनी आती है। भवन पर पेड़, खंबे या अन्य बड़े भवन की छाया कब और कितनी आती है, इस पर भी घर का वास्तु निर्भर करता है।

अभ्यास - 2

सही विकल्प चुनिये

1. उत्तर दिशा के शुभ प्रभाव प्राप्त करने के लिए आवश्यक है:-
   (a) उत्तरी भाग नीचा होना चाहिए
   (b) उत्तरी भाग खुला होना चाहिए
   (c) उत्तर दिशा में कोई बड़ा भवन नहीं होना चाहिए
   (d) उक्त सभी
2. आग्नेय कोण कहा जाता है:-
   (a) उत्तर-पश्चिम को **(b)** दक्षिण-पूर्व को
   (c) उत्तर-पूर्व को **(d)** दक्षिण-पश्चिम को
3. पश्चिम दिशा के अधिपति है:-
   (a) परम पिता ब्रह्मा जी **(b)** वरुण देव
   (c) इन्द्र देव **(d)** असुरी पूतना

सही/गलत का निशान लगाइये

4. वास्तु शास्त्र में कुल आठ मुख्य दिशाओं के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।
5. पूर्व दिशा में रुकावट होने पर घर में नर शिशुओं की अधिकता रहेगी।
6. दक्षिण मुखी भूखण्ड महिलाओं से सम्बन्धित कार्यालयों के लिए शुभ होते हैं।
7. नैऋत्य कोण नीचा, खुला व हल्का होना चाहिए।
8. किसी भूखण्ड के उत्तर-पूर्वी भाग में कटाव होना शुभ स्थिति है।

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY, Indore. ☎: 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com

9. प्राचीन काल में समुद्री यात्राओं में दिशा निर्धारण हेतु दिशा सूचक यंत्र ही एकमात्र साधन था
10. शंकु विधि में दिशाएं ज्ञात करने के लिए शंकु की भूखण्ड पर छाया का निरीक्षण किया जाता है ।
11. ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु मं पंच तत्वों का अंश व्याप्त है ।
12. वास्तु में पंच तत्वों का कोई महत्व नहीं है ।
13. ब्रह्माण्ड का जन्म एक विस्फोट बिग-बैंग द्वारा हुआ है ।
14. प्रकृति में पंच तत्वों के असंतुलन से प्राकृतिक विपदाओं का सामना करना पड़ता है ।
15. भवन के दक्षिण-पूर्व भाग में जल का भण्डार अत्यन्त शुभ होता है ।

INSTITUTE OF VEDIC ASTOLOGY, Indore. ☎: 0731-4076612, 4076613. www.ivaindia.com